Chapter. 8

अष्टम अध्याय

उपसंहार

(पृष्ठ ३०२ - ३०६)

उपसंहार

भगवंतराय खीची ने राजनीति और साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये हैं । यद्यपि वे अत्यन्त निर्धन परिवार में जन्मे थे पर उन्होंने आस-पास की शक्तियों का संगठन कर उनमें स्वतंत्रता की भावना का बीजारोपण किया और देश के तत्कालीन अनीतिपूर्ण मुस्लिम शासन के विरोध में उन्हें अपने नेतृत्व में नियोजित किया । उन्होंने जनता के बीच से आकै अपने सहयोगियों में आत्म विश्वास जगाने के लिए उस प्रदेश की गौरवशाली परम्परा का उन्हें बोध कराया । ` मध्य देशीयता ` की भावना का संचार संभवत: इसी लिए उनके समय में व्यापक रूप से हुआ ।

अपने व्यक्तिगत गुणों के कारण इन्हें जनता की सहज आस्था भी सरलता से मिल गई । इनके कार्य-क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अत्यन्त सम्पन्न थी ही नायकत्व के उपयुक्त गुणों से परिपूर्ण होने तथा विधर्मी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्षशील रहने से इन्हें सहयोगियों की पूर्ण निष्ठा और उनका भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ ।

देश में वह युग राजनीतिक जागृति का था और अन्तर्वेद की भूमि में उस जागृति को पल्लवित तथा उसकी जड़े मजबूत करने में इनका सर्व प्रमुख हाथ रहा । इनके अनुयायियों की इन पर अटूट श्रद्धा थी । तभी उस कट्टर युग में भी मुसलमान स्त्रियों का हिन्दुओं द्वारा पाणिग्रहण इनके अनुमोदन के कारण हिन्दू समाज में समादृत हुआ ।

शासन से प्रतिशोध की भावना से प्रेरित हो इन्होंने कोड़ा जहानाबाद के फौजदार जां निसारखां के हरम की बेगमों और लड़कियों की शादियां अपने कुटुम्बियों व अपने सम्बन्धियों से कराई । दूसरी ओर दिल्ली की शक्ति को तोड़ने के लिए निरन्तर संघर्ष मोल लेते रहे ।

वे एक कुशल सेनानायक थे । अपने राज्य में किसी बड़े दुर्ग के न होते हुए भी अन्तर्वेद की समतल भूमि में अपनी सैनिक योग्यता के कारण ही दुर्दमनीय बने रहे । समतल मैदान और मुकाबले की लड़ाई में मुगलों की सेनाओं पर अपेक्षाकृत अल्पसंख्यक सेनाओं से जैसा आतंक इन्होंने जमाया था वह इतिहास का एक असाधारण प्रसंग है ।

हिन्दू राज्य की भावना से प्रेरित होकर मुगलों से विरोध करने के कारण उनका स्थान मध्यकाल के इतिहास में राणा सांगा, महाराणा प्रताप, शिवाजी और छत्रशाल की परम्परा में आता है ।

भगवंतराय खीची की काव्य-प्रतिभा भी उच्चकोटि की थी । उनके काव्य का मुख्य

विषय भक्ति और श्रृंगार है । भक्ति सम्बन्धी रचनाएं प्रबंध और मुक्तक दोनों ही शैलियों में मिलती हैं । तुलसी की ही भांति वे सभी देवताओं को मस्तक भुकाते थे तथा उनके भी इष्टदेव भगवान राम थे । राम और कृष्ण दोनों ही के प्रति आत्म-निवेदन के होने से 'वैधी' और 'रागानुगा' दोनों ही प्रकार की भक्ति में इनके हृदय की आत्माभिव्यक्ति हुई है । इनकी भक्ति का प्रमुख संचारी - भाव उत्साह होने सेभक्ति वीर रस का विषय बन गयी है । स्तोत्र, नख-शिख तथा विरुद आदि प्रचलित शैलियों को इन्होंने अपने भक्त हृदय की अभिव्यक्ति के लिए माध्यम बनाया है ।

मूलप्रकृति वीर होने के कारण इनके श्रृंगार की सबसे बड़ी विशेषता भूषण की भांति वीर बिम्ब विधानों को प्रस्तुत करने में है । रीतिकाल की श्रृंगारी परम्परा को अपनाकर भी इन्होंने मर्यादा का पालन बड़े कौशल से किया है ।

भाषा में स्थानीय प्रयोगों से इनकी भाषा मिश्रित हो गई है । मिश्रित भाषा की परम्परा हिन्दी में बहुत पुरानी है । कुछ शब्दों के रूप भी व्याकरण की दृष्टि से नियंत्रित नहीं हैं पर यह उनकी संगीतज्ञता के कारण है । शब्दालंकारों की योजना में उनकी भाषा अत्यधिक कर्णप्रिय और संगीत मधुर हो गई है ।

महाकवि तुलसीदास का प्रभाव भगवंतराय के मानसिक गठन पर सबसे अधिक था । सेनापति के भी वे निकट हैं । उन्होंने विभिन्न शैलियों की रचनाएं लिखकर काव्य-क्षेत्र की विशिष्ट प्रतिभाओं से होड़ सी की है । उनकी तुलना भूषण और सेनापति से की जा सकती है ।

भगवंतराय का व्यक्तित्व अत्यन्त उदार था । अपने समय के अनेक महाकवियों को उन्होंने संरक्षण प्रदान किया । ये सारे कवि हृदय से अपने संरक्षक के प्रति श्रद्धावनत थे । इसी के फलस्वरूप उनके निधन के पश्चात् शोकोद्गार रूप में जितना साहित्य उनके नाम पर लिखा गया, उतना हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन इतिहास में किसी अन्य ऐतिहासिक व्यक्ति के लिए इतने स्वाभाविक उद्रेक में लिखा नहीं मिलता ।

जंगनामा, रासा, विरुदावली, यश-वर्णन और मुक्तक आदि हिन्दी और फारसी की प्राय: सभी शैलियों में उनका चरित् गाया गया है । इससे उनकी साहित्यिक उदाराशयता पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है । उन्होंने कवियों को कभी अपने प्रशस्तिगान के लिए प्रोत्साहित नहीं किया । उनके सम्बन्ध में लिखा गया अधिकांश साहित्य शोकोद्गार रूप या उनकी स्मृति को सुरक्षित रखने की भावना से ही प्रणीत हुआ है । मुंह देखी प्रशस्तियां कम हैं ।

जनता के हृदय में उनके इस व्यक्तित्व के प्रति अगाध श्रद्धा थी जो आज भी उनके नाम पर चली आती अनुश्रुतियों के माध्यम से जानी जा सकती है। वास्तव में यह गौरव उन्हें अपने लोक-संग्रही व्यक्तित्व के कारण ही मिला है। वे एक कुशल राजनैतिक सामाजिक नेता, योद्धा, कवि, संगीतज्ञ और साहित्य संरक्षक के रूप में अपनी कीर्ति छोड़ गये हैं।

(२)

काश्यप कुल और इटावा नगर में महाकवि देव का जन्म हुआ था। वे संवत् १७७६ तक इटावा में ही रहते रहे। उनके देश भ्रमण और उसके अनुभव के फलस्वरूप जाति विलास का नायिका-भेद लिखने की बात प्रमाणित नहीं प्रतीत होती। भगवंतराय और देव के सम्बन्ध घनिष्ठ थे। उनके यहां रहते समय उन्होंने काव्य-साधना के अतिरिक्त संगीत-साधना भी की और आश्रयदाता की आस्था से प्रभावित होकर राम भक्ति की ओर भी अपनी प्रवृत्ति मोड़ी। सम्भवत: भगवंतराय के यहां से वे आपसी मन-मुटाव के कारण छूटे थे। 'जैसिंह विनोद' नामक रचना उन्होंने इन्हीं के आश्रय में रहकर लिखी थी।

सुखदेव नाम के कई कवियों से सम्बन्धित जानकारी उलझी हुई और विवादपूर्ण है। इस नाम के वास्तव में तीन कवि हो गये हैं। एक कंपिला के निवासी सुखदेव थे जिन्होंने राजसिंह गौर द्वारा दी गयी 'कविराज' उपाधि का बहुत व्यवहार किया है। 'वृत्त विचार' और 'फाजिल अली प्रकाश' दो रचनाएं इन्हीं की हैं। इन रचनाओं का समय संवत् १७२८ से १७३५ के आस-पास था। दूसरे सुखदेव कोई पंडित साधु प्रतीत होते हैं, जिनकी 'अध्यात्म प्रकाश' और 'ज्ञान प्रकाश' नाम रचनाएं मिलती हैं। इनका रचना काल संवत् १७५५ के आस-पास था।

भगवंतराय के सम्पर्क में आने वाले सुखदेव उपर्युक्त दोनों सुखदेव से भिन्न थे। उनके वंशज दौलतपुर जिला रायबरेली में अब भी रहते हैं। इन्होंने डौंड़िया खेरे के राव मर्दन सिंह के यहां रहकर 'मर्दन रसार्णव' तथा 'रस-दीपक' नामक ग्रन्थों की रचना की। अमेठी के हिम्मतसिंह के यहां लिखा गया 'पिंगल-ग्रन्थ' भी सम्भवत: इन्हीं का है। इनका व्यक्तित्व बड़ा समादृत था। कई प्रसिद्ध कवि इनके शिष्य हुए हैं तथा इनके विषय में अनेक अनुश्रुतियां भी प्रचलित हैं।

'भूधर' नाम के भी एक ही समय में तीन कवि हो गये हैं। एक भूधर, जो आगरा के निवासी थे, जैन थे। दूसरे भूधर जौनपुर जिले के शाहगंज कस्बे के निवासी और संयोग से ये भी जैन थे। भगवंतराय के यहां रहने वाले भूधर इन दोनों से अधिक प्रतिभा सम्पन्न थे। इनका

एक छोटा सा ग्रन्थ 'ध्यान बत्तीसी' अभी हाल में मिला है। नेवाज नाम के चार कवियों का उल्लेख मिलता है। इनमें एक आजमशाह के साथ रहे दूसरे छत्रशाल के यहां, तीसरे भगवंतराय के यहां और चौथे ने 'अखरावती' की रचना की। सम्भवत: भगवंतराय और छत्रशाल के सम्पर्क में आये नेवाज एक ही व्यक्ति थे। यदि उन्होंने ही साधु होकर बाद में 'अखरावती' भी लिख डाली हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

सदानन्द नाम के दो समकालीन कवि हुए हैं। एक का असली नाम हुसेन अली था जिन्होंने सदानन्द उपनामसे 'पुहुपावती', 'प्रेमाख्यानक काव्य की रचना की है। भगवंतराय के यहां रहने वाले सदानन्द इनसे भिन्न थे। ये भगवंतराय के यहां से उनके न रहने पर गोण्डा चले गये थे जहां 'जैमिनी पुराण' की रचना की।

'शंभु और नाथ' नाम के यद्यपि कई कवि हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध हैं पर भगवंतराय के यहां रहने वाले शंभु नाथ मिश्र उन सबसे पृथक दीख जाते हैं। ये सुखदेव मिश्र के शिष्य थे।

भगवंतराय के यहां रहने वाले श्यामलाल कवि की रचनाएं नहीं मिलतीं पर उनके भगवंतराय के सम्पर्क में आने के कई बहि:साक्ष्य हैं।

उदयनाथ, गोपाल, मुहम्मद, चतुरेश, मल्ल, कंठहेम, सारंग आदि कवि भी भगवंतराय के सम्पर्क में रहे। इन कवियों की उपलब्ध रचनाएं ही इसका प्रमाण हैं।

भगवंतराय के सम्पर्क में आने वाले कवियों की काव्य-चेतना अत्यन्त जागरूक थी। उन कवियों की पिंगल, रस, नायिका-भेद, अलंकार आदि प्रचलित विषयों की रचनाएं इस तथ्य को प्रकट करती हैं। इन्हीं प्रतिभा सम्पन्न लोगों ने भगवंतराय का धवल-यश गाया है। वीर रसपूर्ण इन कवियों की रचनाओं में नायक के उत्कर्षमय अंतिम कुछ वर्षों का वृत्तान्त है। इन सभी में शैली और विषय-चित्रण की विलक्षणता वर्ण्य चित्र में पूर्णता लाने में सहायक होती है।

(२)

हिन्दी में 'विनोद' कोई काव्य-रूप की दृष्टि से नहीं लिखे गये। 'विनोद' शीर्षक ग्रन्थ शुद्ध शृंगारी अर्थ के नैकट्य में ही प्रचलित हुए हैं। अपने ग्रन्थों के नामकरण में 'विनोद' शब्द का प्रयोग करते समय कवियों ने विशेष रूप से इस शब्द के व्युत्पत्ति लब्ध अर्थ की ओर ही ध्यान दिया है। देव का भी आशय इस से भिन्न नहीं है। प्रौढ़ावस्था की रचना होने के कारण उसका भाव-पक्ष और कला-पक्ष अत्यन्त समृद्ध है। देव की प्रतिभा का इसमें पूर्ण विकास और समर्थ प्रतिनिधित्व है।

जंगनामा युद्ध वर्णन प्रधान काव्य ग्रन्थ है । इसका स्वरूप बड़ा ही घुला-मिला है । प्रधानतया उर्दू की मर्सिया गीत शैली, यत्किंचित चरित काव्यों की वर्णनात्मकता को हिन्दी छन्द और लोक काव्य की चेतना लेकर इसका कलेवर विकसित हुआ हैं । सम्पूर्ण रूप से यह भाव-प्रधान श्रेष्ठ वीर-गीति है । तत्कालीन ग्रामीण मुस्लिम समाज में हिन्दुओं के घुले-मिले संस्कारों का इस रचना की पृष्ठ-भूमि में बड़ा ही स्पष्ट संकेत मिलता है । इस रचना की काव्यात्मकता भी लोक काव्यों की स्वाभाविकता और उर्दू की सजीवता से समन्वित है । छंद और भाषा की न्यूनतायें होते हुए भी इसका भाव-पक्ष अत्यन्त सबल और सुगठित है ।

'विरुदावली' एक वीर गीति रचना हैं । इसका रूप वैष्णवाचार्यों के विरुद लक्षणों के अनुरूप न होकर प्रचलित परम्परा से ही गृहीत हुआ है । पद्माकर की 'हिम्मत बहादुर विरुदावली' की अपेक्षा यह अधिक स्पष्ट और स्वाभाविक शैली में है । इसका काव्य सरल और अकृत्रिम है ।

'रासा' एक परिमार्जित रचना है । कवि की सुरुचि और उसके प्रबन्ध कौशल से यह एक सुन्दर खण्ड काव्य बन गया है । विस्तार को बचाकर थोड़े में ही कह गुजरने की कला के कारण इसकी अन्य रासा ग्रन्थों से विशेषता है । इसका कवित्व संतुलित और कौशलपूर्ण है ।

प्रकीर्ण मुक्तक रचनाएं स्वाभाविक उद्रेक के कारण अत्यन्त उच्च कोटि की और प्रभावशाली बन पड़ी हैं । तत्कालीन समाज की वीर-पूजा भावना और उसकी विचार धारा का इनके माध्यम से प्रकाशन होता है ।

'जैसिंह विनोद' रीतिकाल के एक प्रतिनिधि कवि की प्रतिनिधि रचना है इसलिए उसमें रीतिकालीन काव्य वैभव का बड़ा ही समर्थ प्रतिनिधित्व मिल जाता है । परन्तु आलोच्य वीर रसकी रचनायें अपनी प्रकृत-प्रेरणा के फलस्वरूप अपने युग के ऐसे ही साहित्य से जहां अधिक मार्मिक और भाव प्रवण बन सकी हैं वहीं उनकी इतिहास की दृष्टि से फारसी के तथाकथित इतिहासकारों की सामग्री की सत्यता पर आलोच्य वीर रस की रचनाओं के कारण प्रश्न-चिन्ह लग जाता है । इतना ही नहीं स्वयं उन्हीं को एक साथ रखने तथा परीक्षा करने पर उनके अन्तर्विरोधों को स्पष्ट देखा जा सकता है । अत: इतिहास की दृष्टि से जब इनकी परीक्षा अन्य उपलब्ध साक्ष्यों से की जाती

है तब इनका पक्षपात स्पष्ट हो जाता है । इस दृष्टि से कवियों का काव्य अधिक इतिहास परक मिलता है । अतएव भगवंतराय के मंडल की रचनायें तत्कालीन इतिहास को समझने में बहुत अधिक सहायक सिद्ध होती हैं । फारसी इतिहास कारों की अपेक्षा इतिहास के सत्य का निर्वाह इन कवियों ने अधिक ईमानदारी से किया है ।

-00-